2018

HINDI

[Honours]

PAPER – II

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×2

   (क) "सूर ने विरह का व्यापक क्षेत्र प्रस्तुत किया है। कृष्ण के वियोग में गोपियों के आँसुओं की धारा हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है" — कथन की विवेचना कीजिए।

   (ख) "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसी का काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है" — स्पष्ट कीजिए।

   (ग) कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(घ) घनानंद भक्त कवि हैं अथवा शृंगार के कवि ? तर्कसहित उत्तर दीजिए ।

(ङ) भूषण के काव्य में वीररस का सुंदर वर्णन हुआ है— भूषण की वीर रसात्मक कविताओं के आधार पर कथन की विवेचना कीजिए ।

2. किन्हीं *चार* काव्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8×4

(क) कातिक सरद चंद उजियारी । जग सीतल, हौं बिरहै जारी ।।
चौदह करा चाँद परगासा । जनहुँ जरै सब धरति अकासा ।।
तन मन सेज करै अगिदाहू । सब कहै चंद, भएह मोहि राहू ।।
चहूँ खंड लागै अँधियारा । जौं घर नाहीं कंत पियारा ।।
अबहूँ निठुर ! आउ एहि बारा । परब देवारी होइ संसारा ।।
सखि झूमक गावै अँग मोरी । हौं झुरावै, बिछुरी मोरि जोरी ।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा । मो कहँ बिरह, सवति दुख दूजा ।।
सखि मानै तिउहार सब, गाइ देवारी खेलि ।।
हौं का गावौं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि ।।

(ख) भीजै चुनरिया प्रेम रस बूँदन ।
आरत साज के चली है सुहागिन पिय अपने को ढूँढन ।
काहे की तोरी बनी चुनरिया काहे को लगे चारों फूँदन ।
पाँच तत्त की बनी चुनरिया नाम के लागे फूँदन ।
चढ़िगे महल खुल गई रे किबरिया दास कबीर लगे झूलन ।

(ग) बिनु गुपाल बैरनि भई कुंजैं ।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई बिषम ज्वाल की पुंजैं ।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलै, अलि गुंजैं ।
पवन, पानि, घनसार, सँजीवनि, दधिसुत-किरन भानु भई भुंजैं ।
ए उधो । कहियो माधव सो बिरह कदन करि मारत लुंजैं ।
सूरदास प्रभु कौ मग जोवत, अँखिया भई बरन ज्यों गुंजैं ।

(घ) तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आज
तुमही जगत काज पोषत भरत हौ ।
तुम्हैं छोड़ि यातै काहि बिनती सुनाऊँ मैं ।
तुम्हारे गुन गाऊँ तुम ढीले क्यों परत हौं ।
भूषन भनत वहि कुल मैं नयो गुनाह
गाहक समुझि यह चित्त मैं धरत हौं ।
और ब भनन देखि करत सुदामा सुधि
मोहि देखि काहे सुधि भृगु की करत हौ ।।

(ङ) कारी कूर कोकिला ! कहाँ क बैर काढ़ति री,
कूकि-कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै ।
पैड़े परे पापी ये कलापी निसद्यौस ज्यौं ही,
चातक ! घातक त्यौं ही तू हू कान फोरि लै ।

आनन्द के घन प्रानजीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेली सब घेरी दल जोरि लै ।
जो लौं करैं आवन बिनोद बरसावन वे,
तौं लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै ।

(च) बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ ।।
नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल ।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगैं कौन हवाल ।।

3. निम्नलिखित किन्हीं *आठ* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×8

(क) कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा ?

(ख) 'सीस जटा, उर-बाहु बिसाल' — किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ? लिखिए ।

(ग) 'रामचन्द्रिका' किसकी रचना है ?

(घ) उहिं खाएँ बौराय, इहिं पाए ही बौराय — में 'उहिं' एवं 'इहिं' का अर्थ लिखिए ।

(ङ) 'साजि चतुरंग बीर रस में तुरंग चढ़ि' — में 'चतुरंग' को स्पष्ट कीजिए ।

(च) घनानंद दिल्ली के किस बादशाह के मीर मुंशी थे ?

(छ) "सूर वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँक पाए" — किस प्रसिद्ध आलोचक का कथन है ?

(ज) 'कवितावली' मे कुल कितने खण्ड हैं ?

(झ) 'पद्मावत' के अतिरिक्त जायसी की एक अन्य रचना का नाम लिखिए ।

(ञ) बिहारी ने किस राजा के आश्रय में 'सतसई' की रचना की ?

4. किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4×5

(क) घनानंद और कृष्ण भक्ति

(ख) बिहारी और शृंगार

(ग) तुलसीदास और उनकी भाषा

(घ) कबीर की सामाजिक चेतना

(ङ) कठिन काव्य के प्रेत — केशवदास

(च) सूरदास की भाषा-शैली

(छ) नागमती वियोग खंड में सावन और भादों का प्रकृति-वर्णन

(ज) भूषण का शिवाजी प्रशस्ति-चित्रण